वर्ष 2011–12 के दौरान किए गए हिंदी कार्यों/गतिविधियों की एक झलक

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की तथा इसके विभिन्न क्षेत्रीय केन्द्रों में राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम तथा इनके अंतर्गत राजभाषा हिंदी के प्रयोग संबंधी समस्त प्रावधानों एवं अनुदेशों का अनुपालन सुनिश्चित कराने की जिम्मेवारी संस्थान के हिंदी प्रकोष्ठ को सौंपी गई है। सरकार की राजभाषा नीति के समुचित अनुपालन तथा राजभाषा विभाग द्वारा वार्षिक कार्यक्रम में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग संबंधी लक्ष्यों को प्राप्त करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान ने वर्ष 2011–12 के दौरान हिंदी की अनेकों गतिविधियां आयोजित की।

संस्थान में 80 प्रतिशत से भी अधिक पदाधिकारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है। इसलिए भारत सरकार ने राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की को राजभाषा नियम 10(4) के अंतर्गत अधिसूचित किया है। संस्थान भारत सरकार की राजभाषा नीति के व्यापक प्रचार–प्रसार तथा कार्यान्वयन के लिए निरंतर प्रयास करता आ रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रेरणा एवं प्रोत्साहन के माध्यम से समुचित बढ़ावा दिया जा रहा है। सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग के प्रति अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मन में एक सार्थक सोच विकसित हो, इसके लिए भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही प्रोत्साहन योजनाएं लागू की गई है। इसके तहत अधिकारियों के लिए "सर्वाधिक हिंदी डिक्टेशन" तथा कर्मचारियों के लिए "मूल हिंदी टिप्पण/आलेखन" प्रोत्साहन योजनाएं लागू की गई हैं।

संस्थान में राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) का समुचित ढंग से अनुपालन सुनिश्चित किया जा रहा है। संस्थान परिसर में लगे सभी नोटिस बोर्ड, नाम–पट्ट तथा साइन बोर्ड द्विभाषी रूप में बनवाए गए हैं। रबड़ की मोहरें, रजिस्टर, फाइल शीर्ष तथा मानक फार्म द्विभाषी रूप में उपलब्ध हैं और इन्हें प्रयोग में भी लाया जा रहा है।

इसके अलावा संस्थान द्वारा वर्ष के दौरान आयोजित की गई विभिन्न गतिविधियों का तिथिवार क्रम में विवरण निम्नवत् है :–

- संस्थान अपने राजभाषा कर्मियों के कौशल को बेहतर बनाने के दृष्टिकोण से उन्हें विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों में प्रशिक्षण हेतु नामित करता है। इसी क्रम में संस्थान के वरिष्ठ हिंदी अनुवादक को केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 13 जून, 2011 से 17 जून, 2011 तक आयोजित किए गए उच्च स्तरीय अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम हेतु नामित किया।

- दिनांक 30/06/11 को संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 51वीं बैठक निदेशक रा.ज.सं. की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस बैठक में हिंदी में किए जा रहे कार्यों की समीक्षा के साथ–साथ सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार द्वारा राजभाषा हिंदी के राष्ट्रव्यापी प्रचार–प्रसार के सिलसिले में गठित कार्य योजना समिति में संस्थान की ओर से श्री पंकज गर्ग, वैज्ञानिक–बी को नामित किया गया तथा उक्त समिति की दिनांक 26.07.2011 को बी.एच. ई.एल, हरिद्वार में आयोजित बैठक में श्री पंकज गर्ग, वैज्ञानिक–बी तथा श्री पी.के.उनियाल, वरि. हिंदी अनुवादक को नामित किया गया।

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार द्वारा दिनांक 09 अगस्त, 2011 को पंजाब नेशनल बैंक मंडल कार्यालय, रानीपुर हरिद्वार में आयोजित 12वीं अर्धवार्षिक बैठक एवं पुरस्कार वितरण समारोह में संस्थान की ओर से श्री पी.के.उनियाल को नामित किया गया।

- संस्थान में दिनांक 16 अगस्त, 2011 से 14 सितम्बर, 2011 तक हिंदी मास मनाया गया। इस दौरान हिंदी निबंध, काव्य–पाठ, क्विज, सुलेख, आशुलिपि एवं वाद–विवाद प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। बेहतर प्रदर्शन करने वाले पदाधिकारियों को 14 सितम्बर, 2011 को हिंदी दिवस के अवसर पर पुरस्कृत भी किया गया।

- हिंदी मास–2011 के दौरान दिनांक 12 सितम्बर, 2011 को "वैज्ञानिक एवं प्रशासनिक कार्यों में हिंदी का प्रयोग" विषय पर एक ब्रेन स्टॉर्मिंग सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र में आई.आई.टी., रूड़की, आई.आर.आई., रूड़की, बी.एच.ई.एल, हरिद्वार तथा रा.ज.सं. के प्रतिनिधियों ने प्रतिभाग किया तथा अपने–अपने संस्थानों में हो रहे हिंदी कार्यों का ब्यौरा प्रस्तुत किया। इस अवसर पर भूजल विभाग, जोधपुर के डॉ. डी.डी.ओझा, वरिष्ठ वैज्ञानिक को मुख्य व्याख्यानदाता के रूप में आमंत्रित किया गया था।

- संस्थान की वार्षिक हिंदी पत्रिका–प्रवाहिनी के 18वें संस्करण का विमोचन हिंदी दिवस पर मुख्य अतिथि के हाथों करवाया गया।

- इसी अवसर पर संस्थान की तकनीकी पत्रिका–जल चेतना के प्रवेशांक का विमोचन भी हिंदी दिवस पर मुख्य अतिथि के हाथों करवाया गया।

- संस्थान के 34वें स्थापना दिवस के अवसर पर दिनांक 16–17 दिसम्बर, 2011 को "जल संसाधनों के प्रबंधन में नवीनतम तकनीकों का प्रयोग" विषय पर चतुर्थ राष्ट्रीय जल संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें 42 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। संगोष्ठी की संपूर्ण कार्यवाही हिंदी में सम्पन्न हुई।

- संस्थान की वर्ष 2010–2011 की वार्षिक रिपोर्ट का हिंदी संस्करण अंग्रेजी संस्करण के साथ–साथ जनवरी–फरवरी 2012 में प्रकाशित किया गया।

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार द्वारा दिनांक 24 जनवरी, 2012 को होटल गंगा रिवेरा, हरिद्वार में भारतीय स्टेट बैंक, रानीपुर की ओर से आयोजित 13वीं अर्धवार्षिक बैठक में संस्थान की ओर से डॉ. रमा मेहता, श्री पी.के.उनियाल, श्री पवन कुमार तथा श्री दौलत राम ने प्रतिभाग किया।

- संस्थान में दिनांक 09 मार्च, 2012 को "हिंदी सॉफ्टवेयर–यूनीकोड" तथा "प्रयोजनमूलक हिंदी" विषयों पर एक हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में संस्थान के 45 पदाधिकारियों ने प्रतिभाग किया। उक्त विषयों पर क्रमशः श्री नरेश कम्बोज तथा डॉ. नरेश मोहन (दोनों बी.एच.ई.एल. हरिद्वार) ने व्याख्यान दिए।

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार द्वारा दिनांक 16 मार्च, 2012 को बी.एच.ई.एल., हरिद्वार में आयोजित राजभाषा समन्वयकर्ता सम्मेलन में संस्थान की ओर से श्री पी.के.

उनियाल तथा श्री पवन कुमार को राजभाषा हिंदी के प्रयोग से जुड़े विभिन्न मदों पर चर्चा हेतु नामित किया गया।

- उत्तर क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गाजियाबाद द्वारा भारत के महासर्वेक्षक के कार्यालय, देहरादून में दिनांक 23 मार्च, 2012 को आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार सम्मेलन में डॉ. रमा मेहता, श्री पी. के. उनियाल तथा श्री पवन कुमार ने संस्थान का प्रतिनिधित्व किया।

- संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 52वीं बैठक दिनांक 26 मार्च, 2012 को निदेशक रा.ज.सं. की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस बैठक में हिंदी में किए जा रहे कार्यों की समीक्षा के साथ–साथ सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

- हर वर्ष की तरह ग्रामीण महिलाओं एवं स्कूली बच्चों के लिए जल एवं जल संरक्षण विषय पर जानकारी देने के लिए संस्थान द्वारा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मानूबास ग्रंट (विकास खंड–बहादराबाद) में हिंदी में एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 50 महिलाओं तथा 60 स्कूली बच्चों ने प्रतिभाग किया। इस अवसर पर ग्रामीण महिलाओं द्वारा अपने घरों से लाए गए पेय जल के नमूनों का गुणवत्ता परीक्षण किया गया तथा उपचारात्मक सुझाव भी दिए गए।

इसके अलावा संस्थान राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार एवं प्रगामी प्रयोग को समुचित बढ़ावा देने की दिशा में पूर्णरूप से समर्पित है।